





अंगूर के बाग में काम करने वाले मजदूर

मती 20:1-16

यीशु के दृष्टांत

यीशु ने दृष्टांत की शुरुआत इन शब्दों से की: "क्योंकि स्वर्ग का राज्य ऐसा है..."।

यहां वह इस बात का विरोधाभास दिखा रहे हैं कि हम पृथ्वी पर चीजों को किस तरह देखते हैं और परमेश्वर का राज्य किस तरह काम करता है। यह आमतौर पर हमारे अभ्यस्त तरीके से बिल्कुल विपरीत ढंग से संचालित होता है।

स्वर्ग का राज्य कहाँ है? वहाँ कौन रहता है?

स्वर्ग का राज्य केवल स्वर्ग और ईश्वर के घर को ही संदर्भित नहीं करता; बल्कि इससे कहीं अधिक व्यापक है। एक आने वाला राज्य जो भविष्य में मसीह के लौटने पर स्थापित होगा।

लेकिन अभी स्वर्ग का राज्य यहीं है, पर आप उसे देख नहीं सकते।

यह उस तरह से नहीं आया जैसा शिष्यों ने सोचा था; वे एक भौतिक राज्य की उम्मीद कर रहे थे जहाँ मसीह इस्त्राएल को छुड़ाएगा, रोम को पराजित करेगा और सिंहासन पर विराजमान होगा। वे यह नहीं समझ पाए कि अभी समय नहीं आया था, बल्कि उनकी मृत्यु और पुनरुत्थान में विश्वास ने ही राज्य को हमारे भीतर पृथ्वी पर लाया। राज्य विद्यमान है, और जो लोग यीशु में अपना विश्वास और भरोसा रखते हैं, वे इस पृथ्वी पर उसमें जी रहे हैं। यह संसार से भिन्न है, और यीशु निरंतर लोगों को बता रहे हैं कि राज्य कैसे कार्य करता है, और हमें चीजों को राज्य की मानसिकता से कैसे देखना चाहिए।

इस राज्य में, जो सबसे पीछे होंगे वे सबसे आगे होंगे, और जो सबसे आगे होना चाहते हैं उन्हें सभी का सेवक बनना होगा। (मरकुस 10:44)

... परमेश्वर का राज्य इस तरह से नहीं आता जिसे देखा जा सके। कोई भी यह नहीं कहेगा, "देखो, यह यहाँ है!" या "यह वहाँ है!"

...क्योंकि परमेश्वर का राज्य तुम्हारे भीतर है।

लूका 17:20-21

परमेश्वर का राज्य शब्दों में नहीं, बल्कि सामर्थ्य में है। 1 कुरिन्थियों 4:20

क्योंकि परमेश्वर का राज्य खाना-पीना नहीं है, बल्कि धार्मिकता, शांति और पवित्र आत्मा में आनंद है। रोमियों 14:17

यीशु अपनी कहानी शुरू करते हैं।

एक व्यक्ति जो घर का मालिक, गृहस्वामी या भूस्वामी था, सुबह जल्दी (लगभग 6:00 बजे) अपने अंगूर के बाग के लिए मजदूर किराए पर लेने निकला।

मुझे लगता है कि हम शायद यह मान सकते हैं कि यह दिन का पहला घंटा था। उन्होंने एक कीमत तय की और उसने उन्हें काम करने के लिए अंगूर के बाग में भेज दिया। कुछ अनुवादों में एक दीनार बताया गया है, और कुछ में एक पैसा। यह उस समय का मानक रोमन सिक्का था, और एक दिन की मजदूरी के बराबर था। वास्तव में यह एक उचित मजदूरी थी, और कुछ स्रोतों के अनुसार यह दस गधों की कीमत थी।

तीसरे घंटे (सुबह 9:00 बजे) वह आदमी बाहर गया और उसने देखा कि बाज़ार में कुछ और लोग खड़े हैं, जिनके पास कोई काम नहीं है।

उन्होंने उनसे अंगूर के बाग में भी जाने को कहा और कहा कि वह उन्हें "जो भी उचित होगा" भुगतान करेंगे।

यह घटना छठे घंटे (दोपहर) और नौवें घंटे (दोपहर 3:00 बजे) फिर से घटी।

फिर आखिरी समय (शाम 5:00 बजे) पर वह बाहर गया और उसने कुछ अन्य लोगों को खड़े हुए और काम न करते हुए पाया। उसने उनसे पूछा कि वे दिन भर वहाँ क्यों खड़े रहे और काम नहीं किया। उन्होंने जवाब दिया कि ऐसा इसलिए था क्योंकि किसी ने उन्हें काम पर नहीं रखा था।

उन्होंने उनसे यह भी कहा कि वे अंगूर के बाग में जाएं, और जो भी उचित मजदूरी होगी, वही उन्हें मिलेगी।

जब शाम आया, मालिक ने अपने प्रबंधक को सभी श्रमिकों को बुलाने और उन्हें उनकी मजदूरी देने का आदेश दिया, सबसे आखिरी श्रमिक से शुरू करके पहले श्रमिक तक। उस समय मजदूरी दैनिक आधार पर देने का रिवाज था।

जब ग्यारहवें घंटे में काम शुरू करने वाले मजदूर आए, तो उन्हें तय मजदूरी, यानी दीनार, मिली। पहले आए मजदूरों ने सोचा था कि आखिरी मजदूरों को मिली मजदूरी देखकर उन्हें ज्यादा मजदूरी मिलेगी। लेकिन सभी को बराबर मजदूरी मिली।





अंगूर के बाग में काम करने वाले मज़दूर

चर्चा करना:

आपको कैसा लगेगा? क्या यह उचित लगता है?

यह सोचना हमारे लिए बहुत स्वाभाविक है कि यह अन्याय है।

लेकिन क्या यीशु को यह अन्यायपूर्ण लगा?

अगर हम कुछ और सोचते हैं और यीशु कुछ और सोचते हैं, तो गलती किसकी है? गलती हमारी है!

जो मज़दूर वहां लंबे समय से काम कर रहे थे, उन्होंने मालिक के खिलाफ शिकायत करना शुरू कर दिया। उन्होंने कहा, ये आखिरी मज़दूर तो अभी एक घंटे से ही यहां हैं, लेकिन आपने उन्हें बराबर बना दिया हम जैसे लोगों के लिए, जिन्होंने दिनभर भीषण गर्मी में कसरत की है।

ध्यान दें कि उन्होंने जो किया था उसके आधार पर वे और अधिक चाहते थे।

तब मालिक ने कहा, "मित्र, मैं तुम्हारे साथ अन्याय नहीं कर रहा हूँ। क्या तुमने इस राशि पर मेरे लिए काम करने की सहमति नहीं दी थी? जो भी तुम्हें मिले, ले लो।" तुम अपने रास्ते जाओ, और मैं सबको वही दूंगा जो मैंने तुम्हें दिया है। क्या मुझे अपनी चीज़ों के साथ जो चाहूँ वो करना जायज़ नहीं है? क्या तुम इसलिए ईर्ष्या करते हो क्योंकि मैं दूसरों के प्रति दयालु हूँ?

यीशु ने अंत में कहा, जो सबसे पीछे हैं वे सबसे आगे होंगे, जो सबसे आगे हैं वे सबसे पीछे होंगे। बहुतों को बुलाया जाता है, परन्तु कुछ ही चुने जाते हैं।

इसका यह अर्थ नहीं है कि ईश्वर ने उन्हें नहीं चुना है। ईश्वर ने उन्हें बुलाया था, लेकिन उन्हें उनकी अपनी ईर्ष्या और अपनी शिकायत के कारण नहीं चुना गया था।



कहानी में यीशु



यीशु ने इस दृष्टांत की कोई व्याख्या नहीं दी, लेकिन यह उन लोगों के बारे में बताता है जो मुक्ति अर्जित करने का प्रयास करते हैं।

अगर हम मत्ती 19:27-30 पर वापस जाएं, तो वह पतरस के उस प्रश्न का उत्तर दे रहे हैं कि शिष्यों को क्या मिलेगा। यीशु उसे उत्तर देते हैं, लेकिन यह अभी भी वही है जो हम समझ सकते हैं। पिछड़ा हुआ मानना हमारी सामान्य सोच से अलग। लोगों को उनके अच्छे कर्मों के लिए नहीं, बल्कि मसीह का अनुसरण करने और उनके लिए सब कुछ त्याग देने के लिए पुरस्कृत किया जाएगा।

फिर यीशु मज़दूरी की कहानी सुनाने लगते हैं।

इन श्रमिकों को यह उचित नहीं लगा कि सभी को समान वेतन दिया जाए, जबकि उन्हें वही वेतन मिला जिस पर वे काम पर रखे जाने के समय सहमत हुए थे।

उन्हें यह अनुचित लगा कि दिन के अंत में काम पर रखे गए लोगों को भी उतना ही वेतन मिले जितना कि पूरे दिन काम करने वालों को। हम इंसान अक्सर इसी तरह सोचते हैं।

हम अच्छे कर्म करके और सभी आज्ञाओं का पालन करके स्वर्ग के राज्य में प्रवेश पाने का प्रयास करना चाहते हैं।

हम अपनी तुलना उन लोगों से करते हैं जो उतने अच्छे नहीं होते जितना हम खुद को समझते हैं। हम अपने द्वारा किए गए सभी अच्छे कामों से खुद को बड़ा समझते हैं और इससे हमें घमंड होता है। उद्धार का हमसे कोई लेना-देना नहीं है। इसका पूरा संबंध यीशु से है और उन्होंने हमारे लिए जो किया उससे है।

मुक्ति ईश्वर का उपहार है, और कोई भी अपने कर्मों पर या इस बात पर घमंड नहीं कर सकता कि वह इतना अच्छा था कि ईश्वर ने उसे चुना।

चर्चा करना:

क्योंकि तुम अनुग्रह से, विश्वास के द्वारा बचाए गए हो - और यह तुम्हारी ओर से नहीं है, यह परमेश्वर का उपहार है - कर्मों से नहीं, ताकि कोई घमंड न कर सके (इफिसियों 2:8-9)।

इसका क्या अर्थ है? ईश्वर की कृपा से हमारा उद्धार हुआ है। विद्यार्थियों के साथ इस विषय पर चर्चा कीजिए।

यह कृपा हमें विश्वास के द्वारा ही प्राप्त हुई, और केवल विश्वास के द्वारा ही।

यह एक उपहार था। सचमुच एक उपहार! क्या आपने इसके लिए भुगतान किया? क्या आपने इसे कमाया? - नहीं, अगर यह सचमुच उपहार था तो नहीं।

आप अपना उद्धार कमा नहीं सकते। यदि आप अच्छे कर्म करके उद्धार पा सकते, तो आप दूसरों के सामने अपने किए पर गर्व कर सकते थे। यदि यह एक वरदान है, तो यह वरदान देने वाले - ईश्वर - को सम्मान देता है और केवल यीशु को ही महिमा (ध्यान, सम्मान, प्रशंसा) दिलाता है।

उसने हमें बचाया, हमारे धार्मिक कार्यों के कारण नहीं, बल्कि अपनी दया के कारण। उसने हमारे पापों को धो डाला, और पवित्र आत्मा के द्वारा हमें नया जन्म और नया जीवन दिया (तीतुस 3:5)।

क्योंकि वे परमेश्वर के लोगों को अपने साथ सही करने के तरीके को नहीं समझते। परमेश्वर के तरीके को स्वीकार करने से इनकार करते हुए, वे परमेश्वर के साथ सही होने के अपने ही तरीके को अपनाते हैं और व्यवस्था का पालन करने का प्रयास करते हैं (रोमियों 10:3)।

पाठ के प्रश्न और स्मरण श्लोक

37. खोया हुआ सिक्का

1. जब इस महिला का सिक्का खो गया तो उसने क्या किया?
2. जब उसे वह चीज़ मिली तो उसने क्या किया?
3. उसने किसे बताया?
4. जब कोई पश्चाताप करता है तो परमेश्वर के दूत क्या करते हैं?

सपन्याह 3:17

तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे साथ हैं। वह शक्तिशाली सैनिक सा हैं। वह तुम्हारी रक्षा करेगा। वह दिखायेगा कि वह तुम से कितना प्यार करता है। वह दिखायेगा कि वह तुम्हारे साथ कितने प्रसन्न है। वे हसेगा और तुम्हारे बारे में ऐसे प्रसन्न होगा

38. खोया हुआ बेटा

रोमियों 8:35-39 पढ़ें

1. कौन सी बात हमें ईश्वर के प्रेम से अलग कर सकती है?
2. क्या मृत्यु हमें ईश्वर के प्रेम से अलग कर सकती है?
3. हमें स्वर्गदूतों, स्वर्ग के शासकों या किसी और द्वारा अलग नहीं किया जा सकता है?
4. अब हम अलग नहीं हो सकते, है ना?

1 यूहन्ना 4:7-8

हे प्यारे मित्रों, हम परस्पर प्रेम करें। क्योंकि प्रेम परमेश्वर से मिलता है और हर कोई जो प्रेम करता है, वह परमेश्वर की सन्तान बन गया है और परमेश्वर को जानता है। 8 वह जो प्रेम नहीं करता है, परमेश्वर को नहीं जान पाया है। क्योंकि परमेश्वर ही प्रेम है।

39. आपके दिल में क्या भरता है?

1. हमारे शब्द कहाँ से आते हैं?
2. एक अच्छे इंसान के दिल से क्या निकलता है?
3. एक दुष्ट व्यक्ति के हृदय से क्या निकलता है?
4. हम परमेश्वर के सामने किन बातों का हिसाब देंगे?

लूका 6:45

एक अच्छा मनुष्य उसके मन में अच्छाइयों का जो खजाना है, उसी से अच्छी बातें उपजाता है। और एक बुरा मनुष्य, जो उसके मन में बुराई है, उसी से बुराई पैदा करता है। क्योंकि एक मनुष्य मुँह से वही बोलता है, जो उसके हृदय से उफन कर बाहर आता है।

40. अंगूर के बाग में काम करने वाले मज़दूर

इफिसियों 2:8-9 पढ़ें

1. हमें किसने बचाया है?
2. हमें किस चीज़ से बचाया गया है?
3. क्या हमने जो कुछ किया, उससे हमारी जान बच गई?
4. हमें ईश्वर से क्या मुक्ति मिली?
5. यदि यह हमारे कर्मों से होता तो हम क्या कर पाते?

तीतुस 3:5

5 उसने हमारा उद्धार किया। यह हमारे निर्दोष ठहराये जाने के लिये हमारे किसी धर्म के कामों के कारण नहीं हुआ बल्कि उसकी करुणा द्वारा हुआ। उसने हमारी रक्षा उस स्नान के द्वारा की जिसमें हम फिर पैदा होते हैं और पवित्र आत्मा के द्वारा नये बनाए जाते हैं।

